आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021
Received :3\12\2021;Accepted:10\12\2021;Published:24\12\2021

'तीसरी ताली' उपन्यास और एल जी बी टी समुदाय

डॉ.शाफिया फरहिन

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

पी.ई.एस पी यू कॉलेज, मंड्या

E mail: shafiyafarheen01@gmail.com

शफिया फरहीन, 'तीसरी ताली' उपन्यास औरएल जी बी टी समुदाय, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021, (146-152)

ऑब्सट्रैक्ट – हमारे समाज में किन्नरों का अस्तित्व पुरातन काल से है, लेकिन अकसर देखा गया है कि यह समाज, समाज की मुख्य धारा से दूर अपनी अलग ही दुनिया में रहता है। हमने कभी इन्हें किसी सामान्य परिवार में रहते नहीं देखा। उनके हाशिये पर रहने का कारण समाज की मुख्य धारा में जी रहे सामान्य स्त्री या पुरुष हैं जो इन्हें अन्य लिंगी होने के कारण अपने से भिन्न मानते हैं। इस समाज में जब अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने के साथ, जब साहित्य में स्थान पाया तब इनमें भी लैंगिकता को लेकर भिन्नता पाई गई। इस आलेख में इसी विभिन्नता को 'तीसरी ताली' उपन्यास के माध्यम से विचार किया गया है।

की-वर्ड्स- तृतीयलिंगी समुदाय, हिजड़ा, किन्नर, थर्डजेंडर, विमर्शवादी साहित्य, भारतीय समाज, तृतीयलिंगी विमर्श, थर्डजेंडर विमर्श, लेस्बियन, गे, बाइसेक्शुअल, ट्रांसजेंडर, क्वीर, एसेक्स्शुअल और नॉन बाइनरी और इंटर्सेक्स्शुअल इत्यादि।

'किन्नर' अर्थात् वह मनुष्य जो न पुरुष है न ही स्त्री या यूँ कहें कि इनके लिंग की कोई पहचान नहीं होती, जिसकी वजह से वे तथाकथित सभ्य समाज इन्हें अस्वीकार्य मनुष्य जाति में रख दिया जाता है। जिनको परिवार के सदस्य के रूप में तो स्वीकारा नहीं जाता किंतु खुशी के मौके पर इनके आशीर्वाद की ज़रूरत हर परिवार को होती है। यह वह समाज है जिसे जान-बूझ कर हाशिए पर ढकेला गया है। लेकिन यह समाज आज साहित्य के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने में सफल रहा है।

किन्नरों को कई नामों से पुकारा जाता है जैसे- हिजडा, बृहन्नला, उभयलिंगी, ख्वाजासरा, ट्रांसजेंडर, खोजवा, नपुंसक, छक्का, खिचडी, इंटरसेक्स, ट्रांससेक्सुअल, शीमेल आदि। चैनसिंह मीना अपने एक लेख 'थर्ड जेंडर : अस्मिता-संघर्ष और वर्तमान परिदृश्य' में 'किन्नर' को परिभाषित करते हुए लिखती हैं- "सामान्य तौर पर जो लैंगिक रूप से न तो नर होते हैं न मादा, उन्हें ही हिजडा या किन्नर कहा जाता है।"[1]

नीरजा माधव जी ने अपने एक आलेख ' 'यमदीप' लिखते समय' में किन्नरों के लिए प्रयोग किए जानेवाले शब्दों की सूची इस प्रकार दी है- "छिबरी (लिंगरहित हिजडों के लिए प्रयुक्त शब्द), टेपका (नवजात शिशु), टेपकी (नवजात लड़की), कडे ताल (पुरुष वेशधारी हिजडा), बचुरा माता (हिजडों की आराध्य देवी), गिरिया (रखैल पुरुष), कोती (रखैल हिजडा), खैरगल्ले (हिजडों के बंटे क्षेत्र में अनाधिकार प्रवेश करके दूसरे नाचने-गाने वाले हिजडे)।"[2]

विजेंद्र प्रताप सिंह जी ने 'थर्ड जेंडर' को परिभाषित करते हुए लिखा है- "अर्थ की दृष्टि से देखें तो बुनियादी स्तर पर ट्रांस्जेंडर, ट्रांससेक्सुअल, एंड्रोगायन तथा कोथिस को इस प्रकार पाते हैं- एक ट्रांसजेंडर वह व्यक्ति है, जिसे जन्म के समय गुप्तांग के रूप में एक लिंग प्राप्त होता है, परंतु वह लिंग झूठा प्रतिनिधित्व लगता है, अर्थात् यदि पुरुष लिंग के साथ होता भी तो उसके अंदर भावनाएं स्त्री की होती हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि शरीर तो स्त्री का होता है, परंतु हावभाव पुरुषों वाले होते हैं। इस तरह के व्यक्ति की पहचान पारम्परिक पुरुष या महिला के बीच असंदिग्ध रूप से झूलती रहती है। ऐसे व्यक्तियों को ही तृतीय लिंग या ट्रांसजेंडर के रूप में जाना जाता है।"[3]

इक्कीसवीं सदी मूलतः विमर्शों की सदी है क्योंकि इस सदी में साहित्य ने अपने विषय के दायरे को बढाया है। जहाँ पिछली सदी में नारी को केंद्र में रख कर लिखा जा रहा था, वहीं आज इसी साहित्य ने हाशिए पर स्थित समुदाय को भी अपने अंदर समाहित किया है, जिसमें किन्नर समुदाय भी एक है। आधुनिक विमर्श के अंतर्गत वैसे तो दलित, आदिवासी, वृद्धावस्था विमर्श तो आते ही हैं, साथ ही जान बूझ कर हाशिए पर ढकेला गया किन्नर समुदाय भी विमर्श के माध्यम से साहित्य का केंद्र बना।

नीरजा माधव जी द्वारा रचित 'यमदीप' हिंदी में लिखा प्रथम उपन्यास है। इसके पश्चात चित्रा मुद्गल ने पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, शरद सिंह का 'शिखण्डी स्त्री देह से परे', महेंद्र भीष्म का

[1] थर्ड जेंडर विमर्श, सं. शरद सिंह, भारतीय पुस्तक परिषद्, नई दिल्ली, 2019, पृ. 75

[2] थर्ड जेंडर विमर्श, सं. शरद सिंह, भारतीय पुस्तक परिषद्, नई दिल्ली, 2019, पृ. 50

[3] जनकृति (अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका), (थर्ड जेंडर विशेषांक),सं. कुमार गौरव मिश्रा, 'लैंगिक अस्मिता के प्रश्न से जूझता हिजडा समुदाय', विजेंद्र प्रताप सिंह, अंक-18, vol.-2, अगस्त 2016, पृ.57

'किन्नर कथा', रेनू बहल का 'मेरे होने में क्या बुराई है', निर्मला भुराडिया का 'गुलाम मंडी' जैसी एक सूची देखने को मिलती है। इन्हीं उपन्यासों की श्रेणी में एक और उपन्यास शामिल होता है – प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली'। यह उपन्यास केवल किन्नरों पर केंद्रित न रह कर उस समूह पर केंद्रित है जिन्हें आम तौर पर हिजडा या फिर तृतीय लिंगी की श्रेणी में रखा जाता है अर्थात् 'एल.जी.बी.टी क्यू समुदाय'। आम तौर पर तीसरी योनी में जन्में किसी भी मनुष्य को तृतीय लिंगी कहा जाता है। जिन्हें हम 'एल.जी.बी.टी क्यू' समुदाय कहते हैं। जिसके अंतर्गत लेस्बियन, गे, बाइसेक्शुअल, ट्रांसजेंडर, क्वीर, एसेक्स्शुअल और नॉन बाइनरी और इंटर्सेक्स्शुअल आते हैं।

एल जी बी टी समुदाय:

एल (लेस्बियन) : कोई स्त्री जब किसी पुरुष के बजाए अन्य स्त्री की ओर आकर्षित हो तो उसे लेस्बियन कहा जाता है। हमारा समाज यह समझता है कि मानव संबंध सिर्फ एक स्त्री और पुरुष के ही रिश्ते को मान्य समझता है तो वह यह समझता है कि इन दोनों में से कोई एक अवश्य पुरुष की भूमिका निभा रहा होगा। जिनमें से एक साथी छोटे बाल रखती है, मर्दों जैसे कपडे पहनती है तो उसे 'बुच' कहा जाने लगा और जो साडी पहनने वाली, स्त्री जैसे हाव-भाव रखने वाली है उसे 'फेम' कहा जाने लगा। लेकिन असल में ऐसा नहीं होता। कोई भी लेस्बियन स्त्री पुरुष की भूमिका नहीं निभाती बल्कि उसका सह्रीर और पहनावा किसी भी सामान्य स्त्री की तरह ही दिखता है। ठीक ऐसा ही उदाहरण 'तीसरी ताली' की यासमीन और जुलेखा के माध्यम से देखने को मिलता है जो दोनों समलैंगिक हैं। जिन्हें अंग्रेज़ी में गे-वूमेन या लेस्बियन कहा जाता है।

वैसे तो यासमीन और ज़ुलेखा दोनों में से किसी में पुरुषत्व का कोई भाव देखने को नहीं मिलता और न ही वे मर्दाना कपडे पहंतीं। दूर की रिश्तेदार हैं और दोनों की बचपन की दोस्ती भी है। इनके माँ-बाप जब भी इनकी शादी की बात चलाते तो दोनों का खून खौल उठता क्योंकि उन दोनों का रिश्ता स्वाभाविक रूप से शारीरिक आकर्षण की ओर बढ चुका था। जिन में से जुलेखा एक साधारण लड़की थी लेकिन "यास्मीन पक्की औरतखोर थी। औरत को पाते ही वह उसे निचोड लेती थी। खूबसूरत औरत देखते ही उसके नथुने फडफडाने लगते... उसकी गंध को सूँघने के लिए। उसके शरीर में एक अलग तरह की सनसनी फैल जाती। हालाँकि औरत को भोगने का उसका अनुभव सिर्फ जुलेखा को लेकर ही रहा है... वह उसे बिस्तर पर इस तरह पस्त करती थी कि अच्छे-अच्छे मर्द तौबा कर उठें।"[4]

दोनों ने एक दूसरे के प्रेम वश घर छोडने का फैसला किया, और कानूनी तौर पर शादी करने की सोची। तब तक भारत में आर्टिकल 377 भी हट चुका था लेकिन किसी ने समलैंगिक लडकियों की शादी नहीं देखी थी। परिवार के विरोध के डर से जब दोनों ने पुलिस का आरक्षण मांगा तब कांस्टेबल ने कहा

[4] तीसरी ताली, प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2018, पृ. 121-122

"कैसा जमाना आ गया है कि अब लड़की लड़की से शादी करने लगी है। ऐसा होने लग गया तो देश के सारे लडके कुँवारे ही मर जाएंगे।"[5]

एक मुस्लिम समुदाय जहाँ इस्लाम में तीसरी योनी की कल्पना भी नहीं है, वहाँ यासमीन और जुलेखा का संबंध एक अपवाद के रूप में देखा जाता है। वैसे भी हमारे समाज में समलैंगोकों को तो किन्नरों की तरह ही घृणा की दृष्टि से ही देखा जाता है और यह तो कथित सभ्य समाज में अस्वीकार्य भी है।

जी (गे): गे ऐसे मर्द होते हैं जो किसी अन्य मर्द से आकर्षित होते हैं। किसी भी ट्रांसजेंडर समुदाय की तरह गे समुदाय भी अपनी अलग जगह रखता है। 'तीसरी ताली' का सुविमल ऐसा पात्र है। ज्यों की हमारे समाज में मनुष्य का किसी अन्य लिंगी से किया हुआ ब्याह ही मान्य है और अपनी असली लैंगिक पहचान छिपाने के लिए कोई भी समलैंगिक अन्य लिंगी से शादी कर लेता है, ऐसा ही काम सुविमल भाई ने भी किया। वे समलैंगिक हैं फिर भी उन्होंने अपने ही दफ्तर की साथी रति से विवाह कर लिया। लोगों के सामने वे पति-पत्नी की तरह ही रहते किंतु अन्य किसी को पता नहीं था कि वे समलैंगिक हैं। स्वयं रति भी इस बात से अपरिचित थी। पति-पत्नी होने के बावजूद इन दोनों में कभी करीबी रिश्ता नहीं बन पाया था। असल में सुविमल भाई को औरतों की गंध से भी नफरत थी। रति कभी-कभी बातों-बातों में सुविमल से लिपटने की कोशिश करती मगर सुविमल उसे कभी करीब नहीं आने देते।

उनके फ्लैट में सुविमल और रति के साथ-साथ अनिल भी रहा करता था। यह अजीब बात थी कि जैसे रति अपने पति का खयाल रखती सुविमल उसी तरह अनिल का ध्यान रखते। और रति का काम भी वे अनिल से ही करवाते। एक रात रति अपने कमरे से टायलेट के लिए बाहर निकली तो देखा सुविमल और अनिल आपस में रतिक्रिया करने में इतना व्यस्त थे कि उन्हें वहाँ रति के होने का पता भी नहीं चला। यह सिलसिला एक साल से चल रहा था परंतु रति इस सबसे अंजान थी। एक दिन रति ने अपनी चुप्पी तोडी और सुविमल से पूछ ही लिया कि अगर तुम्हें स्त्री असह्य है तो शादी का नाटक करने की ज़रूरत ही क्या थी? क्या वे रति से नफरत करते हैं? तब सुविमल भाई कहते हैं- "मुझे स्त्री गंध और उसका संसर्ग पसंद नहीं। मैं पुरुष स्पर्श से अपने को पूर्ण बनाता हूँ।"[6] इसके पश्चात् दोनों का तलाक हो जाता है। और सुविमल अब अनिल के साथ खुश हैं। उपन्यास के बाबू श्यामसुंदर साहब भी इसी श्रेणी में आते हैं, क्योंकि उन्होंने 'हाथी' अर्थात ज्योति नाम का एक लौंडा पाला था। बाबू साहब ऐसे लौंडेबाज़ थे कि उनकी अपनी बीवी से भी भाई-बहन जैसा रिश्ता था। आश्चर्य की बात है कि जो समाज लौंडेबाज़ी जैसी चीज़ को अपना लेता है वही समाज समलैंगिकों और किन्नरों से घृणा करता है।

बी (बायसेक्स्वल): बायसेक्शुअल (उभयलिंगी) वे होते हैं जो किसी भी लिंग के व्यक्ति की ओर आकर्षित हो सकते हैं। अर्थात एक पुरुष को एक स्त्री से भी आकर्षण हो सकता है और किसी पुरुष से भी। ठीक इसी तरह

[5] वही पृ. 131
[6] वही, पृ. 70

स्त्री को किसी स्त्री और पुरुष दोनों के प्रति आकर्षण हो सकता है। 'तीसरी ताली' के संदर्भ में यह पात्र अनिल का है जिसका रिश्ता सुविमल भाई से है। जब सुविमल रति से अपने समलैंगिक होने वाली बात बतात है तब रति कहती है कि सुविमल के समलैंगिक होने के कारण लोग रति बर बांझ होने का ताना मारेंगे तो वह क्या जवाब देगी। सुविमल जवाब के रूप में प्रस्ताव रखते हैं - "देखो रति, तुम भी किसी स्त्री से संबंध बना लो। अलग तरह की अनुभूति होगी।", "यदि तुम्हें यह पसंद नहीं तो तुम अनिल के साथ अपने शारीरिक संबंध बना सकती हो । अनिल स्त्री और पुरुष दोनों के साथ कमफर्टेबुल है।"[7] अर्थात् वह उभयलिंगी है। जिसे भी हमारा समाज अपना नहीं सकता तब जब वह अपनी असली पहचान ज़ाहिर कर दे।

टी (ट्रांसजेंडर): ट्रांसजेंडर असल में तृतीय लिंगी होते हैं जिनके जन्म के वक़्त उन्हें लड़का या लड़की मान लिया जाता है लेकिन बडे होने के बाद उनका लिंग कोई अन्य मालूम होता है। यानी एक लडके के रूप में जन्मा व्यक्ति खुद को लड़की समझ सकता है और लड़की के रूप में जन्मा व्यक्ति खुद को लड़का महसूस कर सकती है। 'तीसरी ताली' उपन्यास के विनीत के विनीता बनने और राजा के रानी बनने का सफर ऐसा ही है। जिनमें से विनीत तो जन्म से ही यौन विकलांगता के साथ पैदा हुआ था और राजा को ज़बरदस्ती हिजडा बनना पडा। और ज्योति की कथा भी इन से भिन्न नहीं है।

गौतम साहब के घर में चार लडकियों के बाद जन्मा विनीत अकसर अपनी बहनों के कपडे और मेकप लगाया करता था। इससे चिंतित उसके पिता अकसर उसे ऐसी चीज़ों से दूर ही रखा करते थे। बच्चे के यौनंगों को अविकसित देख कर उसके पिता ने डॉक्टर को दिखाया था तो जवाब मिला था कि- "बच्चे में स्त्री और पुरुष दोनों के लक्षण हैं। मां के पेट में ग्यारहवें सप्ताह सेक्शुअल आर्गन को विकसित करनेवाले हर्मोंस अपनी भूमिका पूरी नहीं कर पाये।"[8] जिसके कारण विनीत के स्त्री-भाव विकसित हो रहे हैं। परिवार की इज़्ज़त बचाने और खुद को मुकम्मल औरत बनाने के लालच में विनीत घर त्याग देता है और दिल्ली जा पहुंचता है। जहाँ केजी मार्ग में उसे कोई रसिक लड़की समझ कर अपने साथ ले जाता है और उसे इस्तेमाल करने के पैसे भी देता है। तब विनीत को एहसास होता है कि वह अब एक संपूर्ण लड़की ही है। इसके बाद उसे कुछ हिजडे अपने इलाके में धंधा करने के लिए मार पीट भी हो जाती है। नतीजतन उसे एक कांस्टेबल अपने घर ले जाता है और आगे चल कर उसी की प्रेरणा से विनीता 'गे वर्ल्ड' नाम से एक ब्यूटी पार्लर खोलती है और देखते ही देखते पेज-थ्री सिलेब्रिटी में शामिल भी हो जाती है। ज्यों की ऐसे लोग अधिकतर अपना पहनावा बदल लेते हैं जिससे वे यह अनुभव कर सकें की वे सही देह में हैं। ऐसे लोगों को 'क्रॉस-ड्रेसर्स' भी कहा जाता है। और कई लोगों को बस पहनावा बदल कर संतुष्टि नहीं मिलती अतः वे हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरपी या फिर सेक्स रीअसाइनमेंट थेरपी करवा लेते हैं। जैसे विनीता ने शारीरिक रूप से स्त्री दिखने के लिए बेंगलूरू से वक्षस्थलों की कास्मेटिक सर्जरी और वेजाइना रिकंस्टक्शन भी करवा लिया था। ऐसे व्यक्ति को ट्रांससेक्शुअल कहा जाता है। 'क्रॉस-ड्रेसर्स' और ट्रांससेक्शुअल दोनों ट्रांसजेंडर ही होते हैं।

[7] वह, पृ. 70

[8] वही, पृ. 41

बात करें इनके यौन आकर्षण की तो जो जन्म के वक़्त लड़का माना गया और बाद में उसने लड़की जैसा महसूस किया। ऐसा व्यक्ति किसी लड़के की ओर आकर्षित हो तो उसे हेटेरोसेक्शुअल ट्रांसजेंडर कहा जाएगा, जिसका उदाहरण 'तीसरी ताली' की विनीता है। और यदि किसी लड़की की ओर आकर्षित हुआ तो लेस्बियन ट्रांसजेंडर और दोनों की ओर आकर्षित हुआ तो बाइसेक्शुअल ट्रांसजेंडर कहा जाएगा। इसी के विपरीत कोई लड़की के रूप में जन्म ले और बाद में उसने खुद लड़का माना तो जब वह किसी लड़की की ओर आकर्षित हुआ तो हेटेरोसेक्शुअल ट्रांसजेंडर, लडके से आकर्षित हुआ तो गे ट्रांसजेंडर और दोनों से आकर्षित हुआ तो बाइसेक्शुअल ट्रांसजेंडर कहलाएगा।

इसी के साथ कुछ अन्य मनुष्य भी किन्नर श्रेणी में आते हैं जो किसी कारण वश किन्नर बन जाते हैं। जिनमें अधिकतर पुरुष ही होते हैं। 'तीसरी ताली' का राजा जिसे डिम्पल अपनी गोद ली बेटी मंजू को गर्भवती बनाने के लिए उसको दंड देते हुए उसका पुरुषांग ही काट देती है और वह अस्पताल में खुद को हिजडा न समझते हुए सोचता है कि- "पुरुषांग कट जाने से क्या आदमी हिजडा बन जाता है? उसकी अभी तक यही सोच थी कि समाज में जो अपने कर्तव्य से डिगता है, उसी को हिजडा कहा जाता है।"[9]

जहाँ राजा को दंड के रूप में हिजडा बनना पडा वहीं ज्योति की कथा अलग है क्योंकी वह बाबू साहब का लौंडा था और अन्य लोगों से छेडे जाने के कारण उसे बाबू साहब ने निकाल दिया था और दलित होने के कारण गांव में रह नहीं सकता था इसलिए वह सोनम नामक किन्नर से मिलता है और खुद भी किन्नर बनने का प्रस्ताव रखते हुए कहता है- "बिना हिजडे के भी तो हिजडा बना हुआ हूँ। जो अपने को मर्द कहते हैं, वे कौन से हिजडों से कम हैं! गरीब का बेटा हूँ, तो पूरे गांव की भौजाई बन गया हूँ।"[10] अंततः सोनम ने सोचा कि ज्योति की मदद की जाए और उसने उसे नीलम के पास भेजने का विचार किया। फिर नीलम के नाम एक पत्र लिखकर ज्योति को दिल्ली रवाना कर दिया। दिल्ली में उन दिनों नाचने-गानेवाले हिजडों की कमी थी सो नीलम ज्योति के आने पर खुश हुई। दो चार हफ्ते बीतने के बाद नीलम ने आदेश दिया कि अब ज्योति को हिजडा बनाने की रस्म कर दी जाए। गाने बजाने के साथ मुर्गे की बली और मुर्गादेवी की पूजा की गई। ज्योती को तख्ते पर लिटाकर उसका पुरुषांग काट दिया गया। रक्त के बहाव के साथ ज्योति का पुरुषत्व भी बह गया। इसमें गोपाल भी एक ऐसा ही पात्र है जो धन और गद्दी पाने के लालच में खुद का पुरुषांग काट कर हिजडा बन जाता है।

उपन्यास में इनके अलावा और भी तृतीय लिंगियों का ज़िक्र उठाया गया है जो जन्म से ही जननांग दोष के साथ पैदा हुए हैं जिनमें डिम्पल, सुनैना, सोनम, अन्ना मौसी जैसे पात्र हैं। यदि उपन्यास से बाहर इतर देखा जाए तो एल जी बी टी के अलावा और चार समुदाय इन्हीं की श्रेणी में आते हैं जो इस प्रकार हैं-

[9] वही, पृ. 74

[10] वही, पृ. 56

क्यू (क्वीर): क्वीर वे होते हैं जो अपनी पहचान को लेकर संदेह में हैं। क्वीर का शाब्दिक अर्थ है 'अजीब'। वे खुद इस बात को लेकर भी संदेह में रहते हैं कि इनका आकर्षण किनकी ओर होगा या होना चाहिए। इसी लिए 'क्यू' को कई बार 'क्वेश्चनिंग' से भी जोडा गया है।

ए (एसेक्शुअल): जिनका किसी की ओर आकर्षण नहीं होता। वे किसी भी अन्य व्यक्ति से शारीरिक संबंध बनाने में घिनाते हैं।

नॉन बैनरी: खुद को न पुरुष मानते हैं न स्त्री।

आई (इंटर्सेक्स): वे लोग होते हैं जिनके जन्म के मौके पर यह तय नहीं होता कि वे स्त्री हैं या पुरुष अर्थात् जिनके जननांग किसी मुकम्मल स्त्री या पुरुष जैसे नहीं दिखते। लेकिन आयु के बढने के बाद वे खुद को स्त्री या पुरुष न मान कर तृतीय लिंगी मान लें।

निष्कर्ष रूप से देखा जाए तो संपूर्ण एल.जी.बी.टी.क्यू समुदाय किन्नर समुदाय के अंतर्गत आता है। भले ही इनकी लैंगिकता अलग-अलग है लेकिन यौन वरीयता भी भिन्न-भिन्न है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रदीप सौरभ जी ने तृतीय लिंगी समुदाय की मुक्त छवि प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस प्रयास के पीछे इनका आशय यह था कि समाज उन्हें भी किसी आम इनसान की तरह ही अपनाए। इन्हें आत्मसम्मान के साथ जीने का मौका दे और यह भी उसी स्वातंत्र्यता का अनुभव करें जिसका अनुभव देश का प्रत्येक नागरिक करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

i. थर्ड जेंडर विमर्श, सं. शरद सिंह, भारतीय पुस्तक परिषद्, नई दिल्ली, 2019, पृ. 75
ii. थर्ड जेंडर विमर्श, सं. शरद सिंह, भारतीय पुस्तक परिषद्, नई दिल्ली, 2019, पृ. 50
iii. जनकृति (अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका), (थर्ड जेंडर विशेषांक),सं. कुमार गौरव मिश्रा, 'लैंगिक अस्मिता के प्रश्न से जूझता हिजडा समुदाय', विजेंद्र प्रताप सिंह, अंक-18, vol.-2, अगस्त 2016, पृ. 57
iv. तीसरी ताली, प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2018, पृ. 121-122
v. वही पृ. 131
vi. वही, पृ. 70
vii. वही, पृ. 41
viii. वही, पृ. 74
ix. वही, पृ. 56

****